नाना संघ के पूर्णकालिक कार्यकर्ता बन गए। कॉलेज की पढाई छोड़कर आगरा पहुंच गए। यहां दीनदयाल जी के सहवास में संघ शाखाओं का विस्तार किया। यहां दीनदयाल जी के रूप में अच्छा सहयोग उन्हें मिल गया। दोनों ने मिलकर संघ कार्य का शाखाओं के माध्यम से विस्तार किया।